THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

हमारी सभी आवश्यकताओं का एक जवाबः हमारी पँहुच के अन्दर!

An answer to all our needs : within our reach!

Author – Masisa Tadio Nazert

Christian Science Sentinel Volume 116, Issue 07, February 17, 2014

एक दिन, जैसे ही मैं अपने एक दोस्त को मिलने गया, मुझे वह एक पेड़ की छाया के नीचे दूसरे दोस्तों के समूह के साथ मिला। वे बड़े जोश के साथ एक रेडियो प्रोग्राम की चर्चा कर रहे थे जो उन्होंने थोड़ी देर पहले सुना था, और वह ''हमारे जीवन की योजना बनाने'' के बारे में था। इस कार्यक्रम के परिचारक के अनुसार, मेरे देश में अनेक पुरूष तथा स्त्रियाँ अपना दो तिहाई समय एक बेहतर जीवन की तलाश में व्यतीत करते है, उसे कभी भी प्राप्त किये बिना। अनेकों के पास न नौकरी और न घर है तथा अपने परिवारों पर निर्भर करते हैं, महसूस करते हैं कि उनका जीवन एक फिसलन वाली ढलान पर है, बिना किसी सुरक्षा और बिना कल की उम्मीद के।

इसलिए रेडियो प्रोग्राम के परिचारक ने नौजवान पीढ़ी को जागरूक होने के लिए आमंत्रित किया, साथ ही यह कहते हुए कि यदि उनके पास अवसर है, लोगों को देश छोड़ने में संकोच नही करना चाहिए तथा कहीं और चले जाना चाहिए। इन शब्दों ने मेरे दोस्तों को उदास कर दिया था। ज्यादातर देश से बाहर जाने के बेहतरीन रास्ते के बारे में पहले से सोच रहे थे, विदेश में एक बेहतर जीवन पाने की उम्मीद में। कुछ फँसे होने तथा अपनी परिस्थिति को न बदल पाने के विचार से इतने अधिक नाराज़ थे कि आवश्यकता पड़ने पर, एक समाधान खोजने के लिए, हिंसा का सहारा लेने के लिए भी तैयार थे।

घर वापिस चलते हुए, मेरे दोस्तों के साथ हुए उत्तेजित वार्तालाप के बारे में जैसे ही मैने सोचा, मैं बहुत भयभीत हो गया। मुझे रेडियो परिचारक के तर्क तथा निष्कर्ष ज्यादा से ज्यादा उपयुक्त लग रहे थे उस समय, मैं क्रिश्चियचन साँयस रीडिंग रूप में एक स्वयं सेवक के तौर पर काम कर रहा था। मेरा गुज़ारा मुश्किल से होता था तथा प्रायः अपनी बहुत मूल आवश्यकताओ को भी पूरा नही कर सकता था। इन नकारात्मक विचारों से परेशान होकर मैनें एक दोस्त के प्रस्ताव पर विचार किया जो मुझे पहले मिला था, उसकी वित्तीय सहायता से देश का छोड़ना। तथापि, इसका अर्थ था रीडिंग रूम में अपने स्वयं सेवक के कार्य को छोड़ना।

उस मानसिक तूफान के दौरान, मुझे मेरी बाइबल खोलने का विचार आया जिसके अन्दर, मैनें कागज का एक टुकड़ा पाया जिस पर किसी ने दो पद्यांश लिखे थे। पहला पद्यांश निम्नलिखित शब्दों के साथ शुरू हुआः ''तुम्हारा हृदय व्याकुल न हो'' (यूहन्ना 14:1)। दूसरा पद्यांश मेरी बेकर एडी द्वारा लिखित मिसलेनियस

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

राइटिगंज़ 1883 – 1896 से था: "वह जो परमेश्वर से परे कुछ भी चाहता है, जीवन, सत्य तथा प्रेम मे हार जाता है" (पृष्ठ:3 58)।

मुझे याद नही कब यह कागज का टुकड़ा मेरी बाइबल में रखा गया था या यह किसने रखा था। परन्तु यह ऐसा था कि जैसे कोई मेरी सभी चिन्ताओ को वास्तव में जानता था तथा मुझे सहायता दे रहा था। इन सत्यों ने मुझे जगाया, अतः मैंने तर्क करना शुरू किया जैसे मैं क्रिश्चियन साँयस में सीख रहा था। यह साँयस सिखाती है कि परमेश्वर सर्वेसर्वा है, कि हमे अपने जीवन में उसे हमेशा सर्वप्रथम रखना चाहिए, और यह कि हमे उसके रूप तथा प्रतिरूप में रचित परमेश्वर के बच्चों की तरह अपनी आध्यात्मिक पहचान के प्रति जागरूक होना होगा। यह साँयस यह भी सिखाती है कि हम सभी एक तथा एकमात्र पिता, परमेश्वर पर निर्भर करते है, जो हमेशा हमारी सभी जरूरतें पूरी करता है, बिना किसी भेदभाव के। परमेश्वर दिव्य प्रेम है, हमेशा अपने बच्चों की देखभाल करते हुए। इन विचारो के बारे में सोचने तथा प्रार्थना करने के बाद अपने देश को छोड़ने का प्रलोभन पूरी तरह से दूर हो गया।

हम सभी एक तथा एकमात्र पिता, परमेश्वर पर निर्भर करते है,
जो हमेशा हमारी सभी जरूरतें पूरी करता है, बिना किसी भेदभाव के।

तब मैंने एक क्रिश्चियन साँयस उपचारक से मिलने का फैसला किया और उसे अपने लिए प्रार्थना करने के लिए कहने के लिए क्योंकि अभी भी मैं सभी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति ने होने की गम्भीर समस्याओं से जूझ रहा था। उपचारक ने यह स्पष्ट किया कि परमेश्वर मुझे प्रेम करता था और मुझे मेरे विचारों को उत्पत्ति के पहले अध्याय में रचना के विवरण के साथ इसके आध्यात्मिक स्पष्टीकरण पर केन्द्रित करने के लिए आमंत्रित किया जैसा कि मेरी बेकर एडी द्वारा उनकी पुस्तक साँयस एण्ड हैल्थ विद कि टू द स्क्रिपचर्स के उत्पत्ति के अध्याय में दिया गया है। उपचारक ने मुझे आश्वासन दिलाया कि हम सभी दिव्य सिद्धान्त के शासन में रहते है, और साथ ही कहा कि दिव्य प्रचुरता में सब कुछ सम्मिलित है जिसकी हमें प्रतिदिन जरूरत होती है, क्योंकि हम एक ऐसे संसार में रहते है जो असीम तथा अनन्त आध्यात्मिक सम्भवताओं से भरपूर है।

जो कुछ उपचारक ने कहा उससे मुझे आश्वासन मिला कि परमेश्वर अनन्त अच्छाई की सर्वविद्यमानता को प्रत्यक्षीकृत करने के लिए मुझे किसी विशिष्ट भौगोलिक स्थान पर जाने की जरूरत नहीं है। विशेषताएँ जैसे संतोष, उदारता, खुशी, करूणा और प्रचुरता स्थिर है तथा अस्तित्व का हिस्सा है। वे मेरी सच्ची सम्पत्ति है, और वे हर समय मौजूद है। इस मुलाकात के बाद, मैंने डर या निराशा की भावना से पूरी तरह से मुक्त महसूस किया।

कुछ समय के बाद मेरा एक दोस्त रीडिंग रूप में आया जब मैं काम कर रहा था। बन्द करने के बाद, हम क्रिश्चियन साँयस के बारे में बात करते रहे। तक उसने मुझे एक नौकरी का प्रस्ताव दिया, उसके कुछ खेतों में काम करने का, बिना उसे किराया दिये। मैंने खुशी से स्वीकार कर लिया।

मैंने सब्जियाँ उगाना तथा उन्हें बेचना शुरू किया। शुरू में, मुझे कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ा क्योकि मैं इस काम मे नया था, परन्तु फिर मैंने इसमें आनन्द मनाना शुरू किया। कुछ महीने के बाद, मैं भूमि के अतिरिक्त टुकड़े पर अपने काम का विस्तार कर पाया – यह किराये पर था। मेरा व्यवसाय तेजी से

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

बढ़ने लगा जब तक कि मैं एक बैंक जो कि सूक्ष्म ऋणों में विशिष्ट था–से एक छोटा कर्ज प्राप्त करने में सक्षम नही हो गया।

आरम्भ में जो कठिन या लगभग असम्भव प्रतीत होता था, सरल और सम्भव हो गया–क्रिश्चियन साँयस द्वारा प्राप्त समझ के लिए धन्यवाद कि हम सभी के पास हमारी चेतना में अनन्त विचार पहले से है। इसलिए, पहले से सब कुछ होते हुए, हम और अधिक की इच्छा नहीं कर सकते।

मैंने प्रायः लोगो को कहते हुए सुना है कि यदि हमारी सरकार बदल जाए, तथा यदि आर्थिक संकट खत्म हो जाए, तब हम सभी अपने बिल चुकाने के, नौकरी प्राप्त करने के, महाविद्यालय में दाखिला पाने इत्यादि के योग्य हो जाऐंगें। मेरे अनुभव ने मुझे दिखाया कि हमे इस जाल में फँसने की जरूरत नहीं है। हम प्रचुरता के अपने दिव्य अधिकार का आनन्द मना सकते है, आज ही। हमारे स्वामी, क्राइस्ट जीसस, ने समझायाः ''क्या तुम यह नहीं कहते कि अभी चार महीने बाकी है और फिर कटाई का समय आएगा? देखो मैं तुमसे कहता हूँ अपनी नज़रें ऊपर उठाओ और खेतों की तरफ देखो। इसलिए कि वे पहले से ही कटाई मे लिए तैयार हैं।'' (यूहन्ना 4:35)

हम हमेशा प्रार्थना में दृढ़तापूर्वक मान सकते है कि हमारे पास भी वह मन है जो क्राइस्ट जीसस में भी था। (फिलिप्पियों 2:5), और प्रत्यक्षीकृत कर सकते हैं कि हमारी जरूरत के साधन पूर्ण रूप से मानसिक हैं; वे आध्यात्मिक विचार है जो हमारी सभी जरूरतों को पूरा करेंगें, और पहले से हमारी पँहुच के अन्दर है।

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.